IJAER/ May-June 2023/Volume-12/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

"कोरोना काल दुनिया भर के युवाओं के लिए मानसिक रूप से चुनौतीपूर्ण काल रहा है, जिसने युवाओं को मानसिक रूप से तोड़ कर रख दिया है, का अध्ययन।"

Dr. L k. Sharma
Supervisor
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर

Snehtara Bijarnia
PhD (Scholar)
JVR-II/20/4020

भूमिका- 19वीं शताब्दी के मध्य में, 'मानसिक स्वास्थ्य' का प्रयोग सर्वप्रथम विलियम स्वीटजर नामक व्यक्ति ने किया था। सामान्य रूप में या सहज रूप में 'मानसिक स्वास्थ्य' किसी व्यक्ति के मन के स्वास्थ्य का उल्लेख करता है। सामाजिक, सांस्कृतिक, शारीरिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र ऐसे क्षेत्र हैं, जो व्यक्ति को मानसिक रूप से प्रभावित करते हैं। 'मानसिक स्वास्थ्य' को सामाजिक रूप से परिभाषित करते हुए, इसका सामाजिक रूप में निर्माण किया जा सकता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के विचारा नुसार- "मानसिक स्वास्थ्य जीवन सलामती की एक वह स्थिति है, जिसमें किसी व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का एहसास होता है, कि वह जीवन के सामान्य तनावों का सामना सहज रूप में कर सकता है, और अपने समाज के प्रति योगदान करने में सक्षम होता है।"

मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे किशोरों के लिए एक जरूरी क्षेत्र हैं। 'मानसिक स्वास्थ्य' बच्चों एवं किशोरों के जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करता है। इसका जीवंत उदाहरण हाल ही में घटित घटना covid-19 महामारी है। इस महामारी ने बच्चों एवं किशोरों के जीवन को हद से ज्यादा प्रभावित किया है। मानसिक रूप से किशोरों को जो ठेस पहुंचाई है, उसके बाद से किशोर इस महामारी से पूर्ण रूप से उभर नहीं पाए हैं। इस महामारी के कारण युवाओं में आत्महत्या के केस भी काफी बढे हैं। कोरोना काल महामारी ने मानसिक रूप से युवाओं को तोड़ कर रख दिया है।इस काल ने युवाओं को शारीरिक एवं मानसिक दोनों ही रूपों में काफी नुकसान पहुंचाया है। बच्चे एवं युवा वर्ग दोनों ही कोविड-19 महामारी के कारण चिंता एवं डिप्रेशन के शिकार हुए हैं। चिंता एवं डिप्रेशन दोनों ही मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं हैं, जिन पर नियंत्रण एवं रोकथाम दोनों ही जरूरी है।

कोरोनावायरस ने दुनिया भर के युवाओं को मानसिक रूप से तोड़ कर रख दिया है। अमेरिकन मेडिकल जनरल जामा पीडियाट्रिक्स ने इसे लेकर 29 रिसर्च का एनालिसिस प्रकाशित किया है। इसमें 80879 युवाओं पर सर्वे किया गया । इस सर्वे के दौरान पाया गया है कि-

1. कोरोनावायरस के दौरान किशोरों एवं बच्चों में डिप्रेशन और चिंता के मामले दोगुने हुए हैं।
2. यूरोप में यूनिसेफ की एक हालिया रिपोर्ट के मुताबिक, आत्महत्या युवाओं की मौत का दूसरा प्रमुख कारण है।
3. दुनिया भर में सबसे ज्यादा परेशानी इटली की युवाओं को झेलनी पड़ रही है। महामारी शुरू होने के बाद यहां 'मेंटल हेल्थ' से पीड़ित युवकों की संख्या में रिकॉर्ड 64% का इजाफा हुआ है। इस खतरनाक ट्रेंड को साइकोलॉजिस्ट ने साइकोपैंडेमिक नाम दिया है। 4.कोविड-19 बच्चों के समग्र विकास पर प्रभाव।
5. कोरोना काल ने युवाओं को मानसिक रूप से कमजोर बनाया।
6. कोरोना काल का युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव।

इटैलियन साइक्लोजिकल एसोसिएशन के प्रेसिडेंट डेविड लैजारी के मतानुसार -"महामारी के दुष्प्रभावों से निकलने में सालों लग जाएंगे।"

इटली के शहर मिलान में -'न्यूरोसाइंस' एंड 'मेंटल हेल्थ' डिपार्टमेंट की डायरेक्टर क्लाउडिया मेंकासी के विचारानुसार-"वर्चुअल एजुकेशन के चलते बच्चे आपस में घुल मिल नहीं सके, जो उनके लिए बेहद जरूरी था।"

-कोरोना काल में खुद को नुकसान पहुंचाने वाले युवाओं की संख्या दोगुनी-इटली में महामारी के दौरान खुद को नुकसान पहुंचाने वाले लोगों की संख्या 2 गुना हो गई है।
एक्सपर्ट्स के अनुसार -"डाटा की कमी इटली सरकार के बढ़ते सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दे को कम करके आंकने को दर्शाती है।"
नेशनल बोर्ड ऑफ़ साइकोलॉजिस्ट के मेंबर फुल्विया सिंग्नानी और क्रिस्टियन रोमानिएलो ने "इटली की 'हेल्थ -मैग्नीज' में लिखा है, कि हम एक आपात स्थिति का सामना कर रहे हैं।"
रोम में चाइल्ड हॉस्पिटल 'बम्बिनो गैसों' की एक रिपोर्ट में पाया कि, "महामारी के दौरान आत्महत्या की कोशिशों और खुद को नुकसान पहुंचाने वाले युवाओं की संख्या दोगुनी हो गई है। इसमें सबसे ज्यादा संख्या 15 से 24 साल की युवाओं की है।"
भारत और कोरोनावायरस (कोविड-19) -30 जनवरी 2020 को आया था भारत में कोरोनावायरस का पहला मामला-भारत में सबसे पहले कोरोनावायरस से संक्रमण का मामला 30 जनवरी 2020 को दक्षिण भारत के केरल में सामने आया था ।वायरस के संक्रमण का पहला शिकार 20 साल की युवति थी। दरअसल वह युवती 25 जनवरी 2020 को चीन के वुहान शहर से लौटी थी । वुहान शहर, वह शहर है, जहां से इस खतरनाक वायरस की शुरुआत मानी जाती है। 12 मार्च 2020 को भारत में कोरोना वायरस के संक्रमण से पहली मौत हुई थी। जानकारी के मुताबिक चीन से निकले कोरोनावायरस ने पिछले 1 साल में भारत में जहां एक करोड़ से ज्यादा लोगों को संक्रमित किया है। वहीं अगर पूरी दुनिया की बात की जाए तो 7:30 करोड़ से ज्यादा लोग संक्रमित हो चुके हैं। साल 2020 कोरोनावायरस महामारी की वजह से भविष्य में हमेशा याद किया जाएगा। कोरोनावायरस का प्रकोप पूरी दुनिया झेल रही है। कोरोना महामारी की वजह से दुनिया भर की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के साथ-साथ भारतीय अर्थव्यवस्था पर भी गंभीर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। कुछ कारोबार के लिए तो कोरोनावायरस काल बनकर सामने आया है, वे कारोबार पूरी तरह नष्ट हो चुके हैं।

कोरोना काल के कहर ने बच्चों एवं युवाओं को मानसिक रूप से तोड़ कर रख दिया है। इस महामारी का बच्चों एवं युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है । बच्चों एवं युवाओं में आपसी मेलजोल कम होने के कारण डिप्रेशन के मामले में बढ़ोतरी हुई है। परिणाम स्वरूप युवाओं में आत्महत्या के केस काफी बढ़े हैं। माता-पिता की जिम्मेदारियां भी दोगुनी हो गई हैं।

युवा और covid-19-एक बेहतर भविष्य का निर्माण-ऐसी शिक्षा देने पर जोर दिया जाना चाहिए, जिससे केवल नौकरी तलाशने वाले युवा ही न तैयार हों, बल्कि नौकरी का सृजन करने वाले छात्रों का भी निर्माण किया जा सके। इस कार्य हेतु उद्योग धंधों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जिससे कम पैसों में अपना खुद का व्यवसाय शुरू किया जा सके। नए कोरोनावायरस ने भारत में भारी तबाही मचाई है हमारे यहां सभी घरेलू उत्पाद (GDP)के पूर्वानुमान नकारात्मक वृद्धि दर की ओर चले गए हैं। देश पर बेरोजगारी की भयंकर मार पड़ी है। गरीबी उन्मूलन की दिशा में हुई प्रगति की उल्टी गति पकड़ने का डर है। इस महामारी के बुरे प्रभाव की चपेट में सबसे ज्यादा (15 से 29 वर्ष) के युवा आए हैं। ये एक साथ तिहरी चुनौती का सामना कर रहे हैं। भयंकर बेरोजगारी और शिक्षा में खलल के साथ-साथ इन्हें असफल होती शिक्षा- व्यवस्था की मार भी झेलनी पड़ रही है।

शिक्षा में व्यवधान- इस महामारी के कारण पूरी दुनिया में 73% युवाओं की पढ़ाई बाधित हुई है, क्योंकि भारत में शिक्षा की उपलब्धता के मामले में अलग-अलग समुदायों के बीच भयंकर असमानता है। महामारी के कारण पढ़ाई में बाधा पड़ने का सबसे बुरा असर या प्रभाव महिलाओं पर पड़ा है ।इसकी बड़ी वजह यह है, कि उन्हें घर में अधिक काम करना पड़ रहा है, बदले में उन्हें पैसे भी कार्य के अनुसार नहीं मिलते हैं। रोम इबोला संकट से मिले सबूत से पता चलता है, कि महामारी के कारण लड़कियों एवं युवतियों पर पढ़ाई छोड़ने का दबाव लड़कों की तुलना में अधिक रहा है।

भयंकर बेरोजगारी-कोरोना महामारी से पहले से ही युवाओं के बीच फोर्स पार्टिसिपेशन रेट लगातार बड़ी तेजी से घट रहा था। वर्ष 2004-05 में जहां यह 56.4% था, वहीं 2018-19 में युवाओं का लेबर फोर्स पार्टिसिपेशन रेट घट कर के केवल 38% ही रह गया था। इससे भी चिंताजनक बात तो NLET के आंकड़े थे।NLET यानी 'नाॅट इन लेबर फोर्स एजुकेशन एंड ट्रेनिंग' के तहत उन लोगों की

संख्या का आंकलन किया जाता है, जो न तो कोई काम कर रहे हैं, और न ही काम की तलाश में हैं। न ही वो किसी तरह की शिक्षा या प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।
भारत के युवाओं पर महामारी के तुलनात्मक रूप से अधिक बुरे प्रभावों से निपटने हेतु इस बात की जरूरत है, कि सरकार युवाओं को राहत देने के लिए, उनके लिए कोई खास कदम उठाए। ताकि युवाओं को न केवल मौजूदा आर्थिक संकट से निजात या छुटकारा पाने में मदद मिल सके बल्कि यह प्रसार भी करें कि इस समय भारत जिस आबादी केस कर से दो-चार है, उससे भी बच सके।
भारत में ऐसे युवाओं की संख्या 10 करोड़ से अधिक है और यह आंकड़ा तब है, जबकि सरकार ने देश के बेकार बैठे युवाओं को नए हुनर सिखाने, उनके बीच उद्यमिता को बढ़ावा देने और रोजगार सृजन के लिए प्रयास किए हैं। पूर्व के वित्तीय और आर्थिक संकटों ने हालात और भी खराब कर दिए हैं। इसका नतीजा यह हुआ है, कि आज देश के युवा आर्थिक रूप से बेहद कमजोर हैं, और तमाम आर्थिक चुनौतियों के दौरान युवाओं के बीच ही बेरोजगारी की दर सबसे अधिक हो जाती है ।कोविड-19 की महामारी भी इसका अपवाद नहीं है।
अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार, कोविड-19 की महामारी से पहले से ही युवाओं के दरमियान बेरोजगार रहने की दर 3 गुना अधिक पाई गई थी और कोरोना महामारी ने हालात और अधिक बिगाड़ दिए। एशियाई विकास बैंक (एडीबी) द्वारा किए गए एक और अध्ययन के अनुसार, कोविड-19 की महामारी के कारण अकेले भारत में ही (41लाख) युवाओं की नौकरियां चली गई।

असफल होती शिक्षा व्यवस्था- युवाओं के बीच बेरोजगारी और शिक्षा की बेहद चिंताजनक स्थिति को और अधिक बिगाड़ने में देश की तमाम संस्थागत, अलग-अलग शिक्षा बोर्ड और अलग-अलग राज्यों की शिक्षा व्यवस्था ने बड़ा योगदान दिया है, क्योंकि हर राज्य की शिक्षा व्यवस्था इस महामारी के संकट से अपने अपने तरीके से निपट रही है। जिसका असर आने वाले समय में ग्रेजुएशन करने वाले छात्र छात्राओं पर पड़ रहा है।

युवाओं के सामने तिहरी चुनौती- आज भारत का प्रत्येक युवा तिहरी चुनौती का सामना करता नजर आ रहा है। एक ओर तो उन्हें नौकरी के बाजार के खराब हालात के कारण बेरोजगारी से जूझना पड़ रहा है। दूसरी ओर शिक्षा- व्यवस्था में व्यवधान के कारण पढ़ाई छोड़ने का दबाव बढ़ गया है। और तीसरा कारण डिजिटल फासले के कारण आने वाली मुश्किलें भी देश के युवा झेल रहे हैं। परीक्षा में लगातार देरी के चलते उन्हें डिग्रियां समय पर नहीं मिल पा रही हैं। और न ही नौकरी की तलाश के लिए स्वतंत्र हो पा रहे हैं । इस प्रकार आज का युवा तिहरी चुनौती से जूझ रहा है।

बेहतर भविष्य निर्माण- सरकार को युवाओं के बेहतर भविष्य निर्माण हेतु ऐसे कारगर कदम उठाए जाने चाहिए, जिससे छात्रों की पढ़ाई बीच में छोड़ने की समस्या को कम किया जा सके। इसके लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है, साथ ही साथ इन चुनौतियों से निपटने हेतु पूरे देश में केंद्र सरकार द्वारा ठोस कदम उठाए जाने चाहिए, तभी इस समस्या से छुटकारा मिल सकता है, अन्यथा नहीं।

निष्कर्ष- विश्व आर्थिक परिदृश्य अक्टूबर 2020 की रिपोर्ट के अनुसार- कोरोना काल (कोविड- 19) महामारी मध्यम अवधि में भारत को ही नहीं ,पूरे देश को विकट परिस्थितियों से गुजरना पड़ा है। कोविड-19 का दौर सभी देशवासियों को ऐसे- ऐसे गहरे जख्म देकर गया है, जिन्हें लाख कोशिशों के बावजूद भी भुलाया नहीं जा सकता है। इस महामारी के कारण श्रम के बाजार को बेहतर बनाने में काफी समय लग जाएगा। अनिश्चितता और बैलेंस शीट की समस्या के कारण निवेश भी कम हो गया है। शिक्षा के क्षेत्र में भी काफी गिरावट आई है। इन सभी की वजह से मानवीय पूंजी का अभाव उत्पन्न हो गया है। ऐसे माहौल में भारत अपने युवाओं की अपेक्षाओं को तोड़ने का जोखिम नहीं ले सकता । भारत पहले ही अपने डेमोग्राफिक डिविडेंड का अधिकतम लाभ उठाने के लिए समय गंवा चुका है। और अब रोजगार सृजन हेतु त्वरित कदम उठाने की आवश्यकता है । शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र की कमियां दूर करने के लिए उचित प्रयासों और व्यवस्था बेहतर बनाने के लिए असरदार उपाय न करने से भारत आबादी के संकट की ओर बढ़ चलेगा।

फिर वह पूर्वी एशियाई देशों की अर्थव्यवस्था के बराबर तरक्की का स्तर हासिल नहीं कर पाएगा। पूर्वी एशिया के इन 'टाइगर देशों' ने आर्थिक प्रगति का जो मुकाम हासिल किया है, वह अपने युवाओं के कारण ही किया है ।अतः भारत सरकार को भी समय रहते युवाओं का भविष्य निर्माण बेहतर बनाने हेतु ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1.सुरेश भटनागर: शिक्षा मनोविज्ञान आर. लाल बुक डिपो, मेरठ; 2007
2.Etevenson Geroges:Mental health planning for Social action,New York ,1956
3. सुरेश भटनागर: समग्र शिक्षा दर्शन, मेरठ; 1968
4. Tompson George:Child psychology,Bombay,1965
5. Skinner and Harriman:Child psychology, Newyork,1970
6. Elephen M.Corey: How-to improve school practice, Newyork
7. आर .एन. शर्मा (डॉ): शैक्षिक मनोविज्ञान, मेरठ, 1968
8.Crow and Crow:1.Mental hygine, Newyork 2.Child psychology, Newyork
9. चार्ल्स ई.स्कीनर: शैक्षिक मनोविज्ञान, दिल्ली ;1964
10. विकिपीडिया: कोविड-19 महामारी, मानसिक स्वास्थ्य
11. दैनिक भास्कर: कोरोना का और युवा,2020
12. राजस्थान पत्रिका: मानसिक स्वास्थ्य और शिक्षा, 2020
13. वर्मा डॉ. रामपाल सिंह: 'शिक्षण तकनीकी' मॉडर्न पब्लिशर्स, 1982 83
14. Wikipedea:https://hi. wikipedea.org>w.... 15.medscape:https://emedicine.medsca....COVID -19